([illegible]) श्रीशठकोप सूरि *[*नम्मालवर *]*

—ॐ विष्णुपाद श्रीभक्तिसिद्धान्त सरस्वती ‘प्रभुपाद *’*

कर्म और ज्ञानसे भक्तिकी प्राचीनता

कुछ लोगोंका ख्याल है कि कलिके प्रारम्भमें ब्राह्मण धर्मकी अवनतिके साथ-साथ वैदिक वैष्णवधर्म भी बौद्ध विप्लवसे प्रभावित होकर मृतप्राय हो चुका था। बौद्धलोग वैदिक कर्मोंके विरुद्ध खड़े होकर सामाजिक ब्राह्मण-धर्मको बहुत कुछ अंशों तक निस्तेज करनेमें सफल होनेपर भी वैष्णव-धर्म चिरकालसे अबाधगति से चलता आ रहा है। कर्मी कुमारिल भट्ट और ज्ञानी शंकराचार्यके बहुत पहलेसे ही सनातन धर्मकी अमृतमयी गाथाएँ भक्तोंका आनन्दवर्द्धन करती आ रही हैं। वेदोंके पारमार्थिक अंशोंकी मर्यादा सर्वदा ही अक्षुण्ण रही है। विष्णुचित्त और योगीन्द्र आदि कतिपय महात्माओंने वैदिक ग्रन्थोंका लोक-समाजमें अधिक प्रचार करनेके लिए उनके मंत्रोंको द्राविड़ अक्षरोंमें रूपान्तरित किया था।

बौद्ध धर्मका प्रचार

आर्यावर्त्तके गगनमें बौद्ध-मेघमाला चारों ओर व्याप्त होकर क्रमशः विन्ध्यपर्वतके दक्षिणकी ओर अग्रसर हुई। दक्षिणावर्त्तका अवलम्बनकर वह सुदूर दक्षिणमें पहुँची। वहाँ भी वह अन्तर्हित न हुई, बल्कि दक्षिणी प्रान्तोंको पीछे छोड़ती हुई समुद्र पार सिंहल द्वीपमें पहुँचकर उसे बौद्धवारिसे प्लावित कर दिया।

शठकोप सूरिकी कृपासे रामनुजाचार्य द्वारा बौद्धवाद**,** कर्मवाद और मायावादके मार्गमें रुकावट

इस भयंकर दुर्दिनमें करुणावरुणालय भगवान्ने भक्तिकी रक्षाके लिये उचित व्यवस्था की थी। जीवोंके सौभाग्यसे भक्तिका वह कोमल सूत्र बौद्धमत, कर्म-सिद्धान्त और मायावादरूप प्रच्छन्न बौद्धमतके प्रचण्ड भारसे छिन्न-भिन्न होनेके बदले समग्र भारतवर्षमें प्रधानतः उत्तर भारतमें विस्तृत हो गया। उस बौद्धवादकी काली घटाओंसे घोर अंधेरी रात्रिमें दक्षिण देशके दक्षिण कोनेमें एक नक्षत्र

उदित हुआ था। उसीकी क्षीण प्रभामें दाक्षिणात्य -शशांक श्रीरामानुज आचार्य वैष्णव -जगतका उपकार करनेमें समर्थ हुए थे। हम इस समय उसी अज्ञात नक्षत्रका अनुसरण कर रहे हैं।

वंश -परिचय

कावेरीके दक्षिणमें पूत -सलिला ताम्रपर्णी प्रवाहित होती है जो पाण्ड्य देशके पापोंको धो -धोकर समुद्रमें बहा ले जाती है। इसी ताम्रपर्णीके तटपर कुरिका नामक एक नगर था। वहाँ विभूतिनाथेन्द्र नामक एक सौभाग्यशाली शूद्र रहते थे। उनके पुत्रका नाम धर्मधनु था। धर्मधनुके पुत्र चक्रपाणि और पौत्र अच्युत हुए। अच्युतके पुत्र सुमति और पौत्र फुत्कार हुए। फुत्कारके पुत्रका नाम कारि था। ये कारि ही श्रीशठकोपके पिता थे।

जन्मस्थान और माता -पिता

पाण्ड्य प्रदेशके पश्चिममें समुद्र के किनारे केरल देश है। वर्त्तमान समयमें केरल प्रदेशको त्रिवाङ्कुर राज्य कहते हैं। महेन्द्रपर्वत केरल और पाण्ड्य —दोनों प्रदेशोंको दो भागोंमें विभक्त करता है। जमदग्निके पुत्र परशुरामजीने कुछ दिनोंतक महेन्द्रपर्वत पर निवास किया था। उसी समयसे वहाँ ब्राह्मण आदि वर्णोंका वास अब भी देखा जाता है। केरल देशमें किसी वैष्णवके घरमें नाथ -नायिकाका जन्म हुआ था। फुत्कारने अपने पुत्रका विवाह इस वैष्णवकन्या नाथ -नायिकाके साथ कर दिया था। इसी नाथ - नायिकाके गर्भसे महानुभव शठकोपने जन्म लिया था। शठकोप दासके शठारि , कारिमार , वकुलाभरण आदि और भी अनेक नाम हैं ।

शैशव

शठकोप जन्मसे ही गूँगे थे। उनकी दृष्टि -शक्तिका भी विकास न हुआ था। मूक और अन्ध होनेके कारण माता -पिता बड़े चिन्तित हुए। उन्होंने उस बालकको एक इमलीके वृक्षके नीचे रख दिया। सोलह वर्षतककी अवस्था बालक शठकोपने उसी इमलीके वृक्षके नीचे अचेतन पदार्थकी तरह व्यतीत किया। साधारण लोग उसे बिलकुल जड़ -पिण्ड समझते थे।

विष्वक्सेनके अवतार शठकोपका

अनिर्वचनीय तेज

शठकोपका चेतन धर्म संकुचित होने पर भी उनके शरीरसे एक अनिर्वचनीय तेज निकलता था। उनके तेजकी तुलना किसी प्राकृत-तेजसे नहीं की जा सकती। दक्षिण देशकी दक्षिणी सीमापर वास करनेवाले जड़प्राय शठकोपके शरीरसे बहिर्गत वह तेज विन्ध्यपर्वतको भेदकर आर्यावर्त्तमें भी देखा जाने लगा। कहा जाता है—शठकोप विष्वक्सेनके अवतार थे; इसीलिए उनके अंगोंसे अप्राकृत ज्योति निकलती थी। प्राकृत जीवोंमें ऐसी ज्योति संभव नहीं है।

मधुर-कवि द्वारा ज्योतिका दर्शन और उसीका अनुसरण कर शठकोप सूरिका दर्शन प्राप्त करना

मधुर कवि एक द्राविड़ ब्राह्मण थे। वे शास्त्रोंका विधिवत् अध्ययन समाप्त कर तीर्थ-भ्रमणके लिए निकल पड़े। घूमते-घामते वे एक बार अयोध्यानाथके दर्शनके लिए साकेतपुरी पहुँचे। वहींपर एक दिन उन्होंने दक्षिण दिशामें एक अलौकिक तेजःपुञ्ज देखा। वे कुतूहलवश उस स्थानकी खोजमें चल पड़े, जहाँसे वह तेजःपुञ्ज चमक रहा था। धीरे-धीरे वे दक्षिणकी ओर बढ़ते गये। किन्तु जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते, ज्योति भी वैसे-वैसे दक्षिणकी ओर सरकती हुई दीख पड़ती। अंतमें वे ताम्रपर्णीके तटपर स्थित कुरिका नगरीमें उपस्थित हुए। वहाँ उन्होंने इमलीके वृक्षके नीचे जड़ पदार्थकी तरह पड़े हुए शठकोपको देखा।

ब्राह्मण द्वारा शठकोपकी परीक्षा और शिष्य होना

शठकोपको देखकर पहले तो वे कुछ हताशसे हो गए। किन्तु थोड़ी देर बाद ही उनको उस ध्यानावस्थित बालकसे बातचीत करनेकी तीव्र उत्कण्ठा हुई। उन्होंने शठकोपके गूँगेपन और अन्धेपनकी परीक्षा करनेके लिए पत्थरका एक बड़ा टुकड़ा उनके आगे जोरसे पटक दिया। जोरों से शब्द हुआ जिसे देखनेके लिए शठकोपने अपनी दोनों आँखोंको खोला। इसे देखकर मधुर कविको बड़ी प्रसन्नता हुई।

अब उनकी प्रज्ञाकी परीक्षा करनेके लिए मधुर कविने पूछा—'देव! यदि जीव प्रकृतिके उदरसे जन्मता है तो वह क्या खाता

है और कहाँ रहता है ?' शठकोपने उत्तर दिया —'जीव 'तद्वस्तु ' खाता है और वहीं रहता है।' अपने प्रश्नकी मीमांसा सुनकर उन्होंने समझ लिया कि 'वकुलाभरण' सर्वज्ञ हैं और काल विलम्ब न कर उनके शिष्य हो गए। कुछ दिनोंतक गुरुदेवके पास रहनेपर एक दिन उन्होंने गरुड़वाहन भगवान् श्रीहरिको प्रत्यक्षरूपमें 'वकुलाभरण' (शठकोप) के निकट दर्शन किया।

रचित -ग्रन्थ

विष्णुचित्त योगीन्द्रने 'द्राविड़ -आम्नाय' की रचनाकर दक्षिणमें वैदिक धर्मकी बहुत सहायता की थी। इधर शठकोपने वेदोंके उत्तर भागको द्राविड़ भाषामें प्रकाशित किया। मधुर कवि कारिमारके (शठकोपके) द्वारा लिखित वेदोंका अर्थ पढ़कर कुछ ही दिनोंमें वेदोंमें पारंगत हो गए। शठकोप द्वारा रचित गाथाओंका आदर क्रमशः बढ़ने लगा। इन्होंने दक्षिणके बहुतसे श्रीविग्रहोंका स्तव लिखा। उनके पद आज भी वहाँके मन्दिरोंमें तथा धार्मिक उत्सवोंमें बड़े प्रेमसे गाए जाते हैं। इस तरह विभिन्न स्तवों की रचना कर इन्होंने दक्षिणके वैष्णवोंका बहुत उपकार कर ३५ वर्षकी अवस्थामें इहलोककी लीला समाप्त की थी।

श्रीशठकोपकी मूर्तिकी पूजा ; श्रीसम्प्रदायके आदि गुरु

श्रीशठकोपके वैकुण्ठगमनके बाद उनके शिष्य मधुर कविने गुरुकी मूर्तिका निर्माण करवाया और उनकी विधिवत् पूजाका बन्दोबस्त किया । शठकोपकी पाण्डित्य -प्रतिभा कुछ ही समयमें चारों ओर फैल गयी। कुछ दुष्ट लोगोंने ईर्ष्याके कारण शठकोपकी सूक्तियोंको नष्ट करनेका भी प्रयास किया था। शठकोप दास अर्थात् नम्मालवर श्रीसम्प्रदायके आदि गुरु माने जाते हैं।

श्रीशठकोप -रचित 'वेदार्थ -चतुष्टय' और 'अर्थपञ्चक' श्रीसम्प्रदायका प्रामाणिक आदर्श है

शठकोप द्वारा रचित ऋग्वेदार्थ —'श्रीवृत्ताख्य' के नामसे प्रसिद्ध है। इसमें एक सौ गाथाएँ हैं। यजुर्वेदार्थमें कुल सात गाथाएँ हैं , जो 'अशिर्षाख्य' के नामसे प्रसिद्ध है। अथर्वार्थमें ८७ और सामार्थमें १०००

गाथाएँ हैं। इन्हीं वेदार्थोंसे श्रीशठकोप सूरिने ‘अर्थ - पञ्चक ’ को प्रकाशमें लाया था।